Sylvia Plath's "Lady Lazarus" Translated into Hindi

Smita Agarwal, University of Allahabad

लेडी लैज़रस

सिल्विया प्लैथ

मैंने कर लिया, फिर एक बार।
हर दस साल में एक बार
किसी तरह, मैं ये कर लेती हूँ

एक तरह का चलता–फिरता चमत्कार,
उज्जवल, एक नात्सी लैम्पशेड की तरह,
मेरा दाहिना पैर

एक पेपरवेट।
मेरा चेहरा एक लक्षणरहित, बेहतरीन
यहूदी रूमाल।

नैपकिन की परत हटाओ
ओ मेरे शत्रु
क्या मैं भयभीत कर देती हूँ ?

ये नाक, आँखों के गड्ढे, दाँतो का पूरा समूह ?
बदबूदार साँस
एक दिन में गायब हो जायेगी।

बहुत जल्द, वह माँस, जिसे क़ब्र की गुफा ने
निगल लिया था,
फिर से मुझमें घर बसायेगा

और मैं बनूँगी, एक मुस्कुराती औरत।
मैं केवल तीस साल की हूँ।
और, बिल्ली की तरह, मुझे नौ बार मरना है।

यह तीसरी बार है।
बेकार की बात है
हर दशक को विध्वंस कर देना

करोड़ो रेशों में।
मूँगफली चबाती भीड़
ठेलमठेल करती है ये देखने को

कि वे , कैसे मेरे हाथ, पैर खोलते है–
निरावरण की प्रर्दशनी।
सज्जनों, देवियों,

ये मेरे हाथ हैं, और ये,
मेरे घुटने।
मैं चमड़ी और हड्डी ही सही,

फिर भी, मैं वही, हूबहू वही, औरत हूँ।
जब ये पहली बार हुआ था, मैं दस साल की थी।
वो एक दुर्घटना थी।

दूसरी बार, मेरा निश्चय था,
मैं वापस हरगिज़ नहीं आऊँगी।
डोल, डोलकर मैं बन्द हो गयी

सीप की तरह।उन्हें कई बार पुकारना पड़ा
और, चिपचिपे मोतियों की तरह, मुझपर से
कीड़ो को चुन–चुन कर हटाना पड़ा।

मरना
एक कला है, और सभी चीजों की तरह।
मैं इसमें विशेष रूप से निपुण हूँ।

इतनी निपुण की इसमें यमलोक की दंड–पीड़ा झलके।
ऐसा लगे, जैसे की यही असलियत है।
तुम कह सकते हो कि ये मेरा धन्धा है।

ये कोठरी में करना सरल है।
करके, जैसे–का–तैसा पड़े रहना, सरल है।
पर वह नाटकीय

वापस लौटना, दिन दहाड़े,
उसी जगह, उसी चेहरे के सामने, वही क्रूर
हास्यमय पुकार सुनना,

'चमत्कार! '
मुझे पछाड़ देता है।
दाम है

मेरे क्षतचिन्ह निहारने का, दाम है
मेरे ह्रदय की धड़कन सुनने का,
(मेरा ह्रदय सचमुच धड़कता है)।

दाम है, बहुत भारी दाम है,
एक शब्द या एक स्पर्श का
या फिर, ख़ून के एक क़तरे का

या, मेरे बालों के एक गुच्छे का, या फिर, मेरे कपड़ो का।
इसलिये, इसिलिए, श्रीमान डाक्टर.....
इसलिये, श्रीमान, मेरे शत्रु।

मैं तुम्हारी रचना हूँ।
मैं तुम्हारी मूल्यवान वस्तु हूँ,
वह विशुद्व, स्वर्ण– शिशु

जो एक चीख़ में पिघलता है।
मैं अलट–पलट कर दहकती हूँ।
ये न सोचो कि मैं तुम्हारी दिलचस्पी को कम महत्व देती हूँ।

राख, राख–
इसे तुम कोंचते हो, हिलाते हो
माँस, हड्डी, यहाँ कुछ भी तो नहीं–

एक साबुन की टिकिया,
एक ब्याह का छल्ला,
खोखले दाँत में जड़ा गया, एक सोने का टुकड़ा।

श्रीमान ईश्वर, श्रीमान लूसिफर,
सावधान
सावधान।

राख के ढ़ेर से
मैं लाल बाल बिखेर उठ खड़ी होती हूँ
और मैं, मर्दों को, हवा की तरह खाती हूँ।

23–29 अक्टूबर, 1962